C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)

आज जो अधिकांश व्यक्ति दु:खी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं। आज उपभोक्तावाद, बाजारवाद और दिखावा का बोलबाला है। "सादा जीवन उच्च विचार"..... यह वाक्य शत प्रतिशत सच है। मनुष्य को चाहिए कि सादा जीवन जिए और उच्च विचारों को जीवन में स्थान दे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हों या फिर दुनिया में भारतीय दर्शन का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद ऐसी बहुत-सी विभूतियों ने सादगी को अपनाया और जनमानस को भी 'सादा जीवन उच्च विचार' का संदेश दिया। लाल बहादुर शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार। यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है। यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं

तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

1. आज अधिकांश व्यक्ति दुखी क्यों हैं?
2. व्यक्ति आदर्श कब बनता है?
3. लाल बहादुर शास्त्री का जीवन क्या दर्शाता है?
4. अस्तेय और अपरिग्रह का महत्त्व क्यों है?
5. मनुष्य कैसे सुखी हो सकता है?

प्र. 2 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

थोड़े से बच्चों के लिए
एक बगीचा है
उनके पाँव दूब पर पड़ रहे हैं
असंख्य बच्चों के लिए
कीचड़, धूल और गंदगी से पटी
गलियाँ हैं जिनमें वे
अपना भविष्य बीन रहे हैं।
कविता में आगे दो दृश्य और आते हैं-
एक मेज़ है
सिर्फ़ छह बच्चों के लिए
और उनके सामने
उतने ही अंडे और सेब हैं
एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच
और हज़ारों बच्चे
एक हाथ में रखी आधी रोटी को

दूसरे से तोड़ रहे हैं।
ईश्वर होता तो इतनी देर में उसकी देह कोढ़ से गलने लगती
सत्य होता तो वह अपनी न्यायाधीश की
कुर्सी से उतरकर जलती सलाखें आँखों में खुपस लेता,
सुंदर होता तो वह अपने चेहरे पर
तेज़ाब पोत अंधे कुँए में कूद गया होता लेकिन
यहाँ दृश्य में
सिर्फ़ कुछ छपे हुए शब्द हैं
चापलूसी की नाँद में
और मस्तिष्क में काले गणित का
पैबंद है।

1. दूब पर पड़ने वाले पाँव किन बच्चों के हो सकते हैं?
2. 'वे अपना भविष्य बीन रहे हैं' से क्या तात्पर्य है?
3. कवि किस बात से निराश हो गया है?

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करे जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें, पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल सकते नहीं।।
'कर्मवीर'
कवि - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1. चिलचिलाती धूप को चाँदनी बना देने का क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति यह कर सकने में समर्थ होते हैं?
2. कविता के आधार पर बताइए कि कर्मवीरों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

पियक्कड़, सोचा

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

प्रहार, अपव्यय

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

संभ्रांत, अवगत

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

ठंडा, जलन

ड़) निम्नलिखित का समस्त पद का विग्रह बनाकर समास का नाम लिखें :3

1. सादर 2. लालटोपी 3. नवग्रह

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. ऋतिका प्रतिदिन विद्यालय जाती है।
2. आप क्या रायपुर रहते हैं?
3. तुम बैठ जाओ।
4. संभवतः इस साल अच्छी वर्षा हो।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
2. हाय! फूल-सी बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।
3. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
4. जरा-से लाल केसर से कि जैसे धूल हो गई।

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमजोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम धरम' वाली कमजोरी? 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी मगर तुम जिस तरह मुस्करा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

क) यहाँ कौन समझौता नहीं कर सका?

ख) होरी को कौन-सी कमजोरी ले डूबी? तथा यह कमज़ोरी किसका बंधन न बन सकी?

ग) 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय क्या है?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. आशय स्पष्ट कीजिए -
   सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे|
2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?
   छोटी बच्ची का बैलों के प्रति प्रेम उमड़ने के निम्नलिखित कारण हैं -
3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -
   'जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।'

4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसे क्यों कहा है?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हटीली
देह की पतली, कमर की है लचीली
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही है, जो छुए यह
दूँ ह्रदय का दान उसको

1. अलसी कहाँ उगी हुई है तथा अलसी का पौधा कैसा है?
2. उपर्युक्त पद्यांश में अलसी के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?
3. अलसी अपने ह्रदय का दान किसे देना चाहती है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2 x 4= 8

1. कवि का ब्रज के वन, बाग़ और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?
2. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?
3. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?
4. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

प्र. 9. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है' - इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख करें। 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

1. 'यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता'
2. 'भाग्य और पुरुषार्थ'

प्र. 11. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए। 5

प्र. 12 महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें। 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।

2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6)

आज जो अधिकांश व्यक्ति दु:खी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं। आज उपभोक्तावाद, बाजारवाद और दिखावा का बोलबाला है। "सादा जीवन उच्च विचार"..... यह वाक्य शत प्रतिशत सच है। मनुष्य को चाहिए कि सादा जीवन जिए और उच्च विचारों को जीवन में स्थान दे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हों या फिर दुनिया में भारतीय दर्शन का डंका बजाने वाले स्वामी विवेकानंद ऐसी बहुत-सी विभूतियों ने सादगी को अपनाया और जनमानस को भी 'सादा जीवन उच्च विचार' का संदेश दिया। लाल बहादुर शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार। यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है। यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं

तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

1. आज अधिकांश व्यक्ति दुखी क्यों हैं?

   उत्तर : आज जो अधिकांश व्यक्ति दु:खी, तनावग्रस्त और रुग्ण दिखाई पड़ते हैं उसका प्रमुख कारण है कि अब हम न सादा जीवन जीना पसंद करते हैं और न उच्च विचार। हम पाश्चात्य संस्कृति से बहुत प्रभावित हुए हैं।

2. व्यक्ति आदर्श कब बनता है?

   उत्तर : यदि सफलता की बुलंदियों को छूता कोई व्यक्ति सादगी अपनाता है तो वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन जाता है।

3. लाल बहादुर शास्त्री का जीवन क्या दर्शाता है?

   उत्तर : लाल बहादुर शास्त्री को चाहे लोग किसी भी बात के लिए जानें लेकिन जो शब्द उनके व्यक्तित्व को बखूबी दर्शाते थे वह हैं सादगी, उच्च विचार और शिष्टाचार।

4. अस्तेय और अपरिग्रह का महत्त्व क्यों है?

   उत्तर : यदि हम अपनी आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं तो यह दूसरे का हक छीनने के समान है। इसी प्रकार यदि हम आवश्यकता से अधिक धन संग्रह करते हैं तो दूसरों को हम उससे वंचित करते हैं। इसीलिए अस्तेय और अपरिग्रह को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

5. मनुष्य कैसे सुखी हो सकता है?

उत्तर : हम त्यागपूर्ण और सादगी पूर्ण जीवन से ही सुखी हो सकते हैं। हमें जीवन में सादगी लानी होगी, पूरे समाज और देश के कल्याण का हित का विचार करना होगा और अनावश्यक भोगवाद से बचना होगा।

प्र. 2 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

थोड़े से बच्चों के लिए
एक बगीचा है
उनके पाँव दूब पर पड़ रहे हैं
असंख्य बच्चों के लिए
कीचड़, धूल और गंदगी से पटी
गलियाँ हैं जिनमें वे
अपना भविष्य बीन रहे हैं।
कविता में आगे दो दृश्य और आते हैं-
एक मेज़ है
सिर्फ़ छह बच्चों के लिए
और उनके सामने
उतने ही अंडे और सेब हैं
एक कटोरदान है सौ बच्चों के बीच
और हज़ारों बच्चे
एक हाथ में रखी आधी रोटी को
दूसरे से तोड़ रहे हैं।
ईश्वर होता तो इतनी देर में उसकी देह कोढ़ से गलने लगती
सत्य होता तो वह अपनी न्यायाधीश की
कुर्सी से उतरकर जलती सलाखें आँखों में खुपस लेता,
सुंदर होता तो वह अपने चेहरे पर

तेज़ाब पोत अंधे कुँए में कूद गया होता लेकिन
यहाँ दृश्य में
सिर्फ़ कुछ छपे हुए शब्द हैं
चापलूसी की नाँद में
और मस्तिष्क में काले गणित का
पैबंद है।

1. दूब पर पड़ने वाले पाँव किन बच्चों के हो सकते हैं?
   उत्तर : दूब पर पड़ने वाले पाँव समृद्ध परिवार के बच्चों के हो सकते हैं।

2. 'वे अपना भविष्य बीन रहे हैं' से क्या तात्पर्य है?
   उत्तर : 'वे अपना भविष्य बीन रहे हैं' का तात्पर्य कूड़ा बीन कर गरीब बच्चे के जीवन चलाने से है।

3. कवि किस बात से निराश हो गया है?
   उत्तर : कवि नैतिक मूल्यों के खो जाने से निराश हो गया है।

प्र. 3 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करे जो शेर का भी सामना।।
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना।।
कोस कितने ही चलें, पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल सकते नहीं।।
'कर्मवीर'
कवि - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

1. चिलचिलाती धूप को चाँदनी बना देने का क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति यह कर सकने में समर्थ होते हैं?

उत्तर : इसका तात्पर्य है कि कर्मवीर चिलचिलाती धूप में भी उसी उत्साह व लगन से काम करते हैं, जैसे चाँदनी की शीतलता में काम कर रहे हों, क्योंकि कर्मवीरों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। उनका लक्ष्य 'कर्म' ही है, उन्हें कोई भी परिस्थिति प्रभावित नहीं कर सकती।

2. कविता के आधार पर बताइए कि कर्मवीरों की क्या विशेषताएँ होती हैं?

उत्तर :

1. कर्मवीर साहसी, उत्साही और कर्मठ होते हैं।
2. वे कार्य को टालने नहीं हैं।
3. कर्मवीर भाग्य के भरोसे नहीं रहते।
4. कर्मवीरों की इच्छा शक्ति दृढ़ होती है।
5. किसी भी कार्य को भी संभव कर देते हैं।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

पियक्कड़, सोचा

उत्तर : अक्कड़, आ

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

प्रहार, अपव्यय

उत्तर : प्र, अप

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

संभ्रांत, अवगत

उत्तर : सम्+भ्रांत, अव+गत

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

ठंडा, जलन

उत्तर : ठंड+आ, जल+अन

ड़) निम्नलिखित का समस्त पद का विग्रह बनाकर समास का नाम लिखें :3

1. सादर 2. लालटोपी 3. नवग्रह

समस्त पद	विग्रह	समास
सादर	आदर सहित	अव्ययीभाव
लालटोपी	लाल है जो टोपी	कर्मधारय
सात दिनों का समाहार	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. ऋतिका प्रतिदिन विद्यालय जाती है।
   उत्तर : विधानार्थक वाक्य
2. आप क्या रायपुर रहते हैं?
   उत्तर : प्रश्नार्थक वाक्य
3. तुम बैठ जाओ।
   उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य
4. संभवतः इस साल अच्छी वर्षा हो।
   उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।
   उत्तर : मानवीकरण अलंकार
2. हाय! फूल-सी बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।
   उत्तर : उपमा अलंकार
3. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
   उत्तर : रुपक अलंकार

4. जरा-से लाल केसर से कि जैसे धूल हो गई।

उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमजोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम धरम' वाली कमजोरी? 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी मगर तुम जिस तरह मुस्करा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

क) यहाँ कौन समझौता नहीं कर सका?

उत्तर : यहाँ प्रेमचंद समझौता नहीं कर सका।

ख) होरी को कौन-सी कमजोरी ले डूबी? तथा यह कमज़ोरी किसका बंधन न बन सकी?

उत्तर : होरी को नियम धर्म को कमज़ोरी ले डूबी तथा यह कमज़ोरी प्रेमचंद का बंधन न बन सकी।

ग) 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय क्या है?

उत्तर : 'नेम धरम' उसकी भी जंजीर थी - का आशय है कि नेम धरम के कारण होरी आजीवन दुःख सहता रहा।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. आशय स्पष्ट कीजिए -

सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे|

उत्तर : सलीम अली प्रकृति के खुले संसार में खोज करने के लिए निकले। उन्होंने स्वयं को किसी सीमा में कैद नहीं किया। टापू बंधन तथा सीमा का प्रतीक है ओर सागर की कोई सीमा नहीं होती है। उसी प्रकार सलिम अली भी बंधन मुक्त होकर अपनी खोज करते थे। उनकी खोज की कोई सीमा नही थी। उनका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था।

2. छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

छोटी बच्ची का बैलों के प्रति प्रेम उमड़ने के निम्नलिखित कारण हैं -

1. छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं और अपने मालिक से दूर हैं।
2. छोटी बच्ची को उसकी सौतेली माँ सताती थी , यहाँ हीरा-मोती पर अत्याचार कर रहा था।

3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -

'जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।'

उत्तर : व्यंग्य - यहाँ पर जूते का आशय समृद्धि से है तथा टोपी मान, मर्यादा तथा इज्जत का प्रतीक है। वैसे तो इज्जत का महत्त्व सम्पत्ति से अधिक हैं। परन्तु आज लोग अपने सामर्थ्य के बल अनेक टोपियाँ (सम्मानित एवं गुणी व्यक्तियों) को अपने जूते पर झुकने को विवश कर देते हैं।

4. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसे क्यों कहा है?

उत्तर : पहले हिंदु और मुस्लिम दो सम्प्रदायों में आज के जैसा भेदभाव नहीं था। उदाहरणस्वरूप - ज्वारा के नवाब के साथ महादेवी वर्मा के पारिवारिक संबंध सगे-संबंधियों से भी अधिक बढ़कर थे। जवारा की बेगम स्वयं को महादेवी की ताई समझती थी तथा उन्होंने ही इनके भाई का नामकरण भी किया। वे हर त्योहार पर उनके साथ घुलमिल जाती थी। बेगम साहिबा के घर में अवधी बोली जाती थी। परन्तु हिंदी और उर्दू भी चलती थी। पहले वातावरण में जितनी निकटता थी, वह अब सपना हो गई है। ऐसे में आत्मीय संबंधों की आज के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (2+2+1)

पास ही मिलकर उगी है
बीच में अलसी हटीली
देह की पतली, कमर की है लचीली
नील फूले फूल को सिर पर चढ़ा कर
कह रही है, जो छुए यह
दूँ ह्रदय का दान उसको

1. अलसी कहाँ उगी हुई है तथा अलसी का पौधा कैसा है?

उत्तर : अलसी चने के पौधे के पास सटकर उगी हुई है। अलसी का पौधा पतला, लंबा है।

2. उपर्युक्त पद्यांश में अलसी के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

उत्तर : अलसी के लिए हटीली, देह की पतली, कमर की लचीली आदि विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

3. अलसी अपने ह्रदय का दान किसे देना चाहती है?

उत्तर : अलसी अपने ह्रदय का दान उसके फूलों को प्रेमपूर्वक छूनेवाले को देना चाहती है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2 x 4= 8

1. कवि का ब्रज के वन, बाग़ और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?

उत्तर : कवि कृष्ण से जुडी हर वस्तु से अपार प्रेम करता है। जिस वन बाग़,और तालाब में कृष्ण ने अपनी नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ की है उन्हें कवि निरंतर निहारना चाहते हैं क्योंकि इससे उन्हें सुख की दिव्य अनुभूति होती है।

2. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?

उत्तर : आज मनुष्य का जीवन कहीं भी सुरक्षित नहीं रह गया है। चारों और असंतोष, हिंसा और विध्वंसक ताकतें फैली हुईं हैं। एक ओर जहाँ हम सभ्यता के विकास के लिए आधुनिक आविष्कार कर रहे हैं तो दूसरी ओर विध्वंसक हथियारों का भी उसी रफ़्तार से निर्माण हो रहा है। हिंसा और आंतक इतना फ़ैल चूका है कि अब मौत की एक दिशा नहीं है बल्कि संसार के हर एक कोने में मौत अपना डेरा जमाए बैठी है। कवि सभ्यता के विकास की इसी खतरनाक दिशा के कारण कह रहा है कि आज हर दिशा दक्षिण दिशा बन गई है।

3. दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर : इस प्रकार की उदासीनता के कई कारण हो सकते हैं जैसे -

1) आज के मनुष्य का आत्मकेंद्रित होना। वे केवल अपने और अपने बच्चों के बारे में ही सोचते हैं।
2) जागरूकता तथा जिम्मेदारी की कमी के कारण लोग सोचते हैं कि यह उनका नहीं सरकार का काम है।
3) व्यस्तता के कारण भी आज के लोग अपनी ही परेशानियों में इस कदर खोये हुए हैं कि उन्हें दूसरे की समस्या से कोई सरोकार नहीं होता है।
4) लोगों को कम कीमत में अच्छे श्रमिक मिल जाते हैं इसलिए भी वे इसके विरूद्ध कोई कदम नहीं उठाना चाहते हैं।

4. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। जैसे संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने सुरों को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है।

प्र. 9. 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है' - इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख करें । 4

उतर : 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है' - इस दिशा मंऔ लेखिका ने निम्न प्रयास किए।

शादी के बाद जब लेखिका को कर्नाटक के छोटे से कस्बे बागनकोट में रहना पड़ा तो वहाँ उनके ही बच्चों को पढ़ने की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी अत: लेखिका ने वहाँ पर स्कूल खुलवाने के लिए

बिशप से प्रार्थना की परन्तु जब बिशप तैयार नहीं हुए तो उन्होंने अपनी कोशिशों तथा कुछ उत्साही लोगों की मदद से स्कूल खोला। उसे सरकारी मान्यता दिलवाई,जिससे स्थानीय बच्चों को शिक्षा के लिए दूर न जाना पड़े ।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

'यदि में स्वास्थ्य मंत्री होता'

यदि मैं अपने देश का स्वास्थ्य मंत्री होता तो अपने आपको, सचमुच बड़ा भाग्यशाली मानता, क्योंकि देश-सेवा का ऐसा सुनहरा अवसर और कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि स्वस्थ लोगों से ही एक सबल राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है।

बचपन से ही मेरे मन में स्वास्थ्य मंत्री बनने की इच्छा थी इसका कारण यह था कि मैं बचपन में जिस कस्बे में पला बढ़ा वहाँ पर प्राथमिक उपचार की भी सुविधा नहीं थी। इस कारण कई बार लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। खुद मेरे दादाजी को सही उपचार न मिलने के कारण उनकी मृत्यु मेरी ही आँखों के सामने हुई।

मैं अपने कार्यकाल के दौरान देश में आम नागरिकों को सस्ती और उचित स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाने हेतु सरकारी अस्पताल का अधिक से अधिक निर्माण करता। जहाँ जनता को मुफ्त जाँच मुफ्त, इलाज, दवाईंयाँ आदि मिलती। मैं जेनेरिक दुकानों में भी वृद्धि करता जिसके फलस्वरूप महँगी दवाई बेचने वालों पर मैं लगाम कस सकता। महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए संसद में एक अलग बजट पेश करता।

भारत वासियों के स्वास्थ्य सुधार के लिए ठोस कदम उठाता, गाँवों की स्वास्थ्य प्रगति के लिए पंचायतों को विशेष अधिकार देता, समाजसुधारकों और ग्राम सेवकों को भी प्रोत्साहित करता।

स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते मैं प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों पर प्रतिबंध लगाता। पर्यावरणीय स्वच्छता के लिए प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा देता और दूसरी और वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान को अधिक से अधिक

बढ़ावा देने के लिए गाँव-गाँव और नगर-नगर नागरिक समितियों का गठन करता और पूरे देश को इसमें सह भागी करता। गंदगी करनेवालों, प्रदूषण फैलाने वाले, नियम और कानून तोड़ने वालों पर कड़ी कार्यवाही करता। मैं स्वयं अपनी सेवा कर्तव्यनिष्ठा से एक आदर्श प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता। मैं विरोधी पक्षों के दृष्टीकोण को समझने की पूरी कोशिश करता और देश की स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने के लिए उनका सहयोग लेता। अपने सहयोगी के सदस्यों को मैं उनकी योग्यता के अनुसार उचित जिम्मेदारी सौंपता, उस सब के प्रति मेरा व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण तथा निष्पक्ष होता, फिर भी किसी तरह भ्रष्टाचार को बर्दाश्त न करता। स्वास्थ्य मंत्री के नाते में अपना लक्ष्य देश को हर तरह से सुखी और समृद्ध और स्वस्थ बनाने की ओर ही केंद्रित करता।

‘भाग्य और पुरुषार्थ’

भाग्य और पुरुषार्थ। कभी लगता है भाग्य श्रेष्ठ है। कभी लगता है कि पुरुषार्थ श्रेष्ठ है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी धारणा होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता कठिन परिश्रम से ही मिलती है। अकर्मण्य व्यक्ति देश, जाति, समाज और परिवार के लिए एक भार बन जाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों का मुँह ताकते रहते हैं, वह पराधीन हैं - दास हैं।

कुछ लोग यह समझते हैं कि 'वही होगा जो मंजूरे खुदा होगा' और अकर्मण्य बन जाते हैं। ऐसे लोग भाग्यवाद में विश्वास करते हैं और प्रयत्न से कोसों दूर रह जाते हैं। आलसी कभी सफलता नहीं पाता। केवल आलसी लोग ही हमेशा 'दैव-दैव' करते रहते हैं और कर्मशील लोग 'दैव-दैव आलसी पुकारा' कहकर उनका उपहास करते हैं।

यह संसार कर्म करने वालों की पूजा करता है। कर्मशील व्यक्ति भाग्य को अपने वश में कर लेते हैं। पर्वत भी इनके आगे शीश झुकाते हैं।

मनुष्य परिश्रम के द्वारा कठिन से कठिन कार्य सिद्ध कर सकता है। परिश्रम अर्थात् मेहनत के ही द्वारा मनुष्य अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। कोई भी कार्य केवल हमारी इच्छा मात्र से ही नहीं सिद्ध होता है, उसके लिये हमें कठिन परिश्रम का सहारा लेना पड़ता है। जैसे सोए हुए शेर के

मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नही करता उसे भी परिश्रम करना पड़ता है, वैसे ही केवल मन की इच्छा से काम सिद्ध नही होते उनके लिये परिश्रम करना पड़ता है। प्राचीन ग्रंथ, महाभारत में भी गुरू द्रोण के शिष्य अर्जुन, कठिन परिश्रम के ही द्वारा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन सके। भारत देश की स्वतंत्रता भी गांधी जी और नेहरू जी जैसे महापुरुषों के परिश्रम का फल है। परिश्रम ही सफ़लता की कुंजी है।

प्र. 11. नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रबंधक को पत्र लिखकर हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु अनुरोध कीजिए। 5

राम भवन
सोलापुर
दिनाँक - 15 मार्च 2015
सेवा में,
प्रबंधक
नेशनल बुक ट्रस्ट
दरियागंज
नई दिल्ली

विषय : पुस्तकें मँगवाने हेतु प्रार्थना पत्र।
महोदय,
मुझे हिन्दी में प्रकाशित इस महीने की नवीनतम पुस्तकें जल्दी ही चाहिए। मैंने पुस्तकों की अग्रिम राशि रूपए 2500 भी दिनाँक 10 मार्च को मनी आर्डर से भेज दी है। अत: आपसे निवेदन है कि मुझे जल्द-से-जल्द पुस्तकों वी.पी.पी से भेजने का प्रयास करें।
धन्यवाद।
भवदीय
सौरभ चटर्जी

प्र. 12 महिला और सब्जीवाले के मध्य संवाद लिखें। 5

सब्जीवाला : क्या चाहिए मेडम?

महिला : प्याज

सब्जीवाला : छोटे या बड़े

महिला : दोनों के क्या दाम है?

सब्जीवाला : छोटे २५ रु. और बड़े २० रु. किलो

महिला : दो दिन पहले तो मेने छोटे प्याज २० रु. में खरीदे थे।

सब्जीवाला : आप सही कह रही है परंतु आज मार्केट में प्याज के दाम बढ़ गए है।

महिला : आप ठीक भाव लगा देना, मैं दूसरी सब्जी भी लेनेवाली हूँ।

सब्जीवाला : देखते है, और क्या दूँ?

महिला :आलू कैसे?

सब्जीवाला : २० रु. किलो

महिला :१ किलो देना

सब्जीवाला : ये लीजिए।

महिला : अब ठीक हिसाब कर दो।

सब्जीवाला : ठीक है मैडमजी।